12

301hi12

पद्माकर

मध्ययुगीन कवियों, विशेषकर रीतिकालीन कवियों का मन श्रीकृष्ण और उनकी लीलाओं के चित्रण में खूब रमा है। उनका दूसरा प्रिय विषय रहा है–वस्तुओं के सौंदर्य का वर्णन। वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत और शिशिर के अनेक लुभावने चित्र इन कवियों ने उकेरे हैं। ऋतुवर्णन प्रायः श्रृंगार रस के आलंबन के रूप में अपनाया गया है। ऋतुओं में भी वसंत का रूप-सौंदर्य अद्भुत है। वसंत के आते ही प्रकृति में ही नहीं मनुष्य के मन में भी हलचल होने लगती है। होली का त्योहार इसी ऋतु में आता है जो हमारे तन-मन को रंग जाता है। यही कारण है कि वसंत को ऋतुराज कहा गया है। रीतिकालीन सुप्रसिद्ध कवि पद्माकर के कुछ कवित्तों में हम वसंत की कुछ छवियों का अवलोकन करेंगे।

श्रृंगारिकता रीतिकालीन काव्य की मुख्य प्रवृत्ति है। इस युग का कवि चाहे भक्ति और नैतिकता की चर्चा कर रहा हो अथवा प्रकृति-चित्रण में तल्लीन हो, श्रृंगारिकता से वह कहीं भी नहीं बच सका है। उसका मन वहीं रमता है। जीवन के उतार-चढ़ाव और आशा-आकांक्षाओं की अन्य छवियों की ओर उसने ध्यान नहीं दिया।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- कवि पद्माकर के मुख्य काव्यात्मक स्थलों और दृश्य चित्रों का चयन कर सकेंगे;
- पद्माकर के सवैयों के भाव-सौंदर्य की समीक्षा कर सकेंगे;
- सवैयों के शिल्प-सौंदर्य और भाषा-सौंदर्य का विवेचन कर सकेंगे;
- वसंत वर्णन, रूप सौंदर्य-चित्रण और फाग के दृश्य चित्रों के सौंदर्य-पक्षों की विशेषताएँ तुलनात्मक रूप में बता सकेंगे;
- कवि की कल्पना, संवेदनशीलता, सहृदयता, चित्रविधायिनी प्रतिभा और भाषा-सौंदर्य की सराहना कर सकेंगे।

टिप्पणी

क्रियाकलाप

निम्नलिखित काव्य-पंक्तियाँ पढ़िए:

भर जाए उन्माद धरा के तन-मन में
आ जाए ऋतुराज अगर तू मधुबन में।
ये तरु-तरु के पात गुलाबी हाथ हिलाकर झूमेंगे,
ये तेरा संकेत मलय के होंठ बसंती चूमेंगे।
महके अमराई, चहके उल्लास घना कोकिल मन में।
आ जाए ऋतुराज अगर तू मधुबन में।

1. उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में किसका आह्वान किया गया है?

.....

2. वसंत के आने पर प्रकृति में क्या परिवर्तन आ जाएगा?

.....

निश्चय ही आपके उत्तर होंगे

1. इन काव्य पंक्तियों में वसंत का आह्वान किया गया है।
2. वसंत के आने पर धरती के मन प्राणों में उन्माद भर जाएगा। उसके स्वागत और अभिनंदन में वृक्षों के पत्ते अपने कोमल-कोमल हाथ हिलाकर खुशी से झूम उठेंगे और मलयपवन के मादक होंठों को चूम लेंगे। अमराइयाँ महक जाएँगी व कोकिलें उल्लास से झूम उठेंगी। वसंत के आ जाने पर सारी प्रकृति में नव नवीन ताज़गी, मस्ती और उत्फुल्लता आ जाती है। इस मस्ती और ताज़गी का वर्णन करते हुए कवि ने उक्त पंक्तियाँ लिखी हैं।

निम्नलिखित कविता को लय के साथ दो तीन बार पढिए:

दक्षिणी बयार चली, दक्षिणी बयार हैं।
मत मुझे पुकार सखे मत मुझे पुकार।।
खोलते रहस्यबंध मुक्त प्राण भूल-भूल
भीड़ हो रही अधीर, खोल-खोल द्वार रे
मत मुझे पुकार सखे, मत मुझे पुकार रे।

12.1 मूलपाठ

आइए, अब देखें कि रीतिकाल के श्रेष्ठ कवि पद्माकर ने वसंत के सौंदर्य चित्र को किस प्रकार प्रस्तुत किया है:

1. वसंत

औरै भाँति कुंजन में गुंजरत भौंर भीर,
औरै डौर झौरन पै बौरन के ह्वै गये।
कहै पद्माकर सु औरै भाँति गलियान,
छलिया छबीले छैल औरै छबि छ्वै गये।
औरै भाँति बिहग-समाज में अवाज होति,
ऐसे ऋतुराज के न आज दिन द्वै गये।
औरै रस, औरै रीति, औरै राग, औरै रंग,
औरै तन, औरै मन, औरै बन ह्वै गये।

2. फाग

एकै संग धाए नँदलाल औ गुलाल दोऊ,
दृगनि गए जु भरि आनंद मढ़ै नहीं।
धोय-धोय हारी, 'पद्माकर' तिहारी सौंह,
अब तौ उपाय एक चित्त में चढ़ै नहीं।
कैसी करौं, कहाँ जाऊँ, कासे कहूँ, कौन सुनै,
कोऊ तो निकासो, जासै दरद बढ़ै नहीं।
एरी मेरी बीर! जैसे-तैसे इन आँखिन तैं।
कढ़िगो अबीर, पै अहीर तो कढ़ै नहीं।

12.2 बोध प्रश्न

1. अचानक पेड़ों पर किसकी गुंजार अधिक सुनाई दे रही है और क्यों?
2. ''बसंत ऋतु के आने पर तन, मन और बन और ही प्रकार के हो गए हैं'', कथन से कवि का क्या अभिप्राय है?
3. गोपी बार-बार किसे और क्यों धो-धो कर हार गई है?

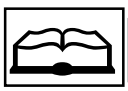

12.3 आइए, समझें

1. वसंत

प्रसंग

प्रस्तुत कवित्त में कवि ने वसंत के कारण प्रकृति के रूप-सौंदर्य में आए अवर्णनीय परिवर्तन का बड़ा अनूठा और उल्लासमय चित्रण किया है।

टिप्पणी

शब्दार्थ

औरै भाँति	–	और ही तरह से, ऐसी स्थिति जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन हो
भीर	–	भीड़, समूह
झौरन	–	झाड़, झुरमुट
बौरन	–	बौर, फूल
छबीले छैल	–	बने-ठने युवक
द्वै	–	दो
ह्वै गये	–	हो गए
धाए	–	दौड़े
दोऊ	–	दोनों
दगनि	–	आँखों में
जु	–	जो
मढ़ै नहीं	–	अपनी जगह से हटता नहीं,
तिहारी	–	तुम्हारी,
सौंह	–	कसम
कासे	–	किससे
निकासो	–	निकालो
कोऊ	–	कोई
जासै	–	जिससे
एरी	–	अरी
बीर	–	बहन जैसी सखी
कढ़िगो	–	निकल गया
पै	–	परंतु
कढ़ै नहीं	–	निकलता नहीं

टिप्पणी

व्याख्या

ऋतुराज वसंत का आगमन प्रकृति में और मानव समाज में बाहर-भीतर अत्यधिक मादकता भर देता है। इस कवित्त में कवि ने शब्द ध्वनियों के माध्यम से वसंत का मनमोहक वर्णन किया है। कवि कहता है कि वसंत को आए अभी दो दिन ही हुए हैं कि कुंजों में भौंरों की भीड़ कुछ और ही तरह से गूँजने लगी है। यहाँ कवि यह कहना चाहता है कि भौरों का समूह प्रसन्नता और हर्षोल्लास के साथ मानो वसंत का उत्सव मनाने के लिए एकत्रित होकर समवेत स्वर में (एक साथ) गुंजार कर रहा हो अर्थात् पुष्प-समूह ने भौरों में एक अलग ही तरह की प्रसन्नता और उत्साह भर दिया है। डाल-डाल पर बौरों के जो गुच्छे दिखाई देने लगे हैं उनका रूप-स्वरूप कुछ ऐसा हो गया है कि उसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। गली-गलियारों में बने-ठने युवक-युवतियाँ भी वसंत के सौंदर्य से उत्पन्न काम भाव से पीड़ित, परंतु हर्षित दिखाई देते हैं।

ऐसे मोहक ऋतुराज बसंत को आए अभी कुछ ही समय बीता है। पक्षी भी सामूहिक रूप से प्रसन्नतापूर्वक चहकने लगे हैं। कवि कहता है कि यह परिवर्तन सब ओर दिखाई दे रहा है। सारा वातावरण रस से, रंग से, रीति से, गीत और प्रेम से बदल गया है। तन, मन और वन-उपवन सभी में बदलाव आ गया है। इस बदलाव को अनुभव ही किया जा सकता है, समझाया नहीं जा सकता।

औरै भाँति कुंजन में गुंजरत भौंर भीर,
औरै डौर झौरन पै बौरन के ह्वै गये।

कहै पद्माकर सु औरै भाँति गलियान,
छलिया छबीले छैल औरै छबि छ्वै गये।

औरै भाँति बिहग-समाज में अवाज होति,
ऐसे ऋतुराज के न आज दिन द्वै गये।

औरै रस, औरै रीति, औरै राग, औरै रंग,
औरै तन, औरै मन, औरै बन है गये।

टिप्पणी

(क) कवि ने वसंत का एक ऐसा उल्लासमय सौंदर्य चित्र उपस्थित किया है, जिसमें रूप, रस, गंध, मादकता का सम्मिश्रण दिखाई देता है।

(ख) निरपेक्ष और शुद्ध प्रकृति-चित्रण का यह एक बड़ा मनोरम और आकर्षक उदाहरण है।

(ग) वातावरण-निर्माण के लिए कवित्त में ध्वन्यात्मक शब्दों का बड़ा कलात्मक प्रयोग किया गया है। इससे जो चित्र तैयार होता है, वह अपेक्षित वातावरण को प्रत्यक्ष करने में बड़ा प्रभावशाली बन पड़ा है। ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा ऐसी प्रतिध्वनियाँ पैदा की गई हैं, जिसका प्रभाव पाठक के मन पर देर तक बना रहता है।

(घ) आप जानते है जब एक ही ध्वनि अथवा वर्ण की पुनरावृत्ति होती है तो उसे अनुप्रास अलंकार कहते हैं। यहाँ 'भीर-भौंर', 'छलिया-छबीले-छैल', 'छबि छ्वै गए', तथा 'तन-मन' में अनुप्रास का चमत्कार देखने योग्य है। इस कवित्त में लगभग प्रत्येक पंक्ति में अनुकरणात्मक शब्द ध्वनियों का अनुप्रास-झंकृत प्रयोग बड़ा सुंदर बन पड़ा है।

(ङ) 'औरे भाँति', की बार-बार आवृत्ति ने भावाभिव्यंजना को और अधिक व्यापक और प्रभावशाली बना दिया है।

(च) आपने पहले पढ़ा होगा कि 'और' शब्द व्याकरणिक दृष्टि से किन्हीं दो शब्दों अथवा वाक्यों को जोड़ने के लिए प्रयुक्त होता है परंतु यहाँ पर यह 'और' शब्द इस रूप में नहीं आया है। यहाँ 'और' का अर्थ विशिष्ट के अर्थ में है अर्थात् जो अकथनीय है, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

पाठगत प्रश्न 12.1

निम्नलिखित प्रश्नों के एक-दो शब्दों या वाक्यों में उत्तर दीजिए:

1. भौंरों की गूँज और ही तरह की क्यों हो गई है?
2. छलिया-छबीले-छैल में कौन-सा अंलकार है?
3. पक्षियों की आवाज़ भी कुछ और ही तरह की क्यों हो गई है?
4. वसंत के चित्रण में किन-किन विशेषताओं की अधिकता है।

12.4 आइए, स्वयं पढ़ें

2. फाग

प्रसंग

प्रस्तुत कवित्त में पद्माकर ने फाग (होली) का बड़ा हृदय स्पर्शी चित्र अंकित किया है। एक गोपिका कृष्ण के साथ गुलाल से फाग खेलने का बड़ा सजीव वर्णन अपनी प्रिय सखी से करती है।

व्याख्या

आपने वसंत का चित्रण पढ़ा और जाना कि पद्माकर की कविता किस प्रकार मन को छू जाती है। वसंत ऋतु की सुंदरता का वर्णन करते हुए भी व्यक्ति को बार-बार यही लगता है कि ऐसा कुछ है जिसका वर्णन करना संभव नहीं, वह तो बस 'और ही कुछ' है।

वसंत से जुड़ा है एक उत्साह उमंग का त्योहार जिसे आप भी खूब जानते हैं। उसे कहते हैं होली। इसी का दूसरा नाम है–फाग। वैसे फाग उन लोकगीतों को भी कहते हैं, जो होली में गाए जाते हैं। आइए देखें पद्माकर फाग का चित्रण किस प्रकार कर रहे हैं। पहले संपूर्ण कवित्त को एक-दो बार पढ़कर स्वयं समझने का प्रयास कीजिए।

आइए, कवि की कल्पना को कुछ गहराई से समझें। पूरा कवित्त एक गोपिका का कथन है। उसकी परेशानी क्या है? इसे समझने के लिए होली के एक रिवाज़ को याद कीजिए। अबीर-गुलाल हवा में उड़ाना-उछालना। यह उड़ता गुलाल तो गोपिका की आँख में चला ही गया है। उसके साथ नंदलाल भी आँख में बस गए हैं। सोचिए समस्या क्या है? केवल गुलाल आँखों में पड़ जाए तो उसे निकालने का क्या उपाय हो सकता था? गोपी आँखें धो-धोकर हार गई है, उसे सफलता नहीं मिल पा रही–ऐसा क्यों? उसे क्या छटपटाहट है? कासे-कहूँ? कौन सुने? में क्या कथा छिपी है? क्या गोपी की बात विश्वसनीय लगती है?

नंदलाल के आँखों में बस जाने का दर्द दूर करने के लिए वह क्या नहीं समझा पा रही है? अबीर तो जैसे-तैसे निकल गया, पर अहीर नहीं। पर अहीर कौन है? कल्पना

टिप्पणी

कीजिए। क्या गोपी सचमुच श्रीकृष्ण को आँखों से दूर करना चाहती है?

चित्र

पूरी कविता में कवि की व्यंजना पर ध्यान दीजिए। यहाँ कृष्ण के प्रति उमड़े प्रेम को आँखों में अबीर पड़ने की स्थिति से वर्णित किया है, पर जितनी सरलता से अबीर धुल जाता है उतनी सरलता से कृष्ण प्रेम नहीं धुल सकता। न गोपी ऐसा चाहती ही है, वह तो अपनी सहेली की सौगंध खाकर उसे आश्वासन दिलाना चाहती है कि वह कृष्ण को निकाल नहीं पा रही है और न उसे इसका कोई उपाय सूझ रहा है!

आप स्वयं इसकी विस्तार से व्याख्या अलग कागज़ पर लिखिए।

कवित्त से अनुप्रास, यमक के उदाहरण छाँटिए। उन पंक्तियों को चुनिए जिसमें गोपिका की अधीरता, अकुलाहट और विवशता चित्रित हुई है। इस बात पर भी ध्यान दीजिए कि इसमें किस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया गया है।

एकै संग धाए नँदलाल औ गुलाल दोऊ,
द गनि गए जु भरि आनंद मढ़ै नहीं।

धोय–धोय हारी, 'पद्माकर' तिहारी सौंह,
अब तौ उपाय एक चित्त में चढ़ै नहीं।

कैसी करौं, कहाँ जाऊँ, कासे कहूँ,
कौन सुनै, कोऊ तो निकासो, जासै
दरद बढ़ै नहीं।

एरी मेरी बीर! जैसे तैसे इन आँखिन तैं।
कढ़िगो अबीर, पै अहीर तो कढ़ै नहीं।

पाठगत प्रश्न 12.2

सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए:

1. गोपिका की ओर एक-साथ कौन-कौन दौड़े–

   (क) ग्वाल-बाल और गुलाल (ग) गुलाल और नंदलाल

   (ख) नंदलाल और ग्वाल-बाल (घ) अहीर युवक और अबीर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो शब्दों या वाक्यों में दीजिए:

2. प्रिय सखी से 'तिहारी सौंह' कहकर गोपिका अपना कौन-सा भाव प्रकट करना चाहती है?
3. गोपिका की विवशता और दयनीयता किस पंक्ति में व्यक्त हुई है?
4. गोपिका की आँखों से क्या बाहर निकल गया और क्या उसके अंदर ही रह गया?

12.5 भाव तथा शिल्प सौंदर्य

कवि पद्माकर के काव्य में रीतिकालीन कविता की सभी प्रमुख विशेषताएँ विद्यमान हैं। वे रीतिबद्ध काव्यधारा के प्रतिभा-संपन्न कवि थे। उनमें शृंगार रस की भावाभिव्यक्ति की

विलक्षण प्रतिभा रही है। इसी कारण कवि पद्माकर रीतिकाल के श्रेष्ठ कवि कहे जाते हैं।

या अनुराग की फागु लखौं, जहाँ रागती राग किसोर किसोरी,
त्यों 'पद्माकर' घालि घली, फिर लाल ही लाल गुलाल की झोरी।
जैसी की तैसी रही पिचकी, कर काहू न केसर रंग की बोरी,
गोरी के रंग में भीजियो साँवरो, साँवरे के रंग भीजिगी गोरी।

उत्कृष्ट कल्पना की उड़ान और विषय-विवेचन की विशुद्धता भी पद्माकर की विशेषता है, जिससे काव्य में लाक्षणिकता और मधुरता आ जाती है। वे अनुप्रासों की तो झड़ी ही लगा देते हैं, जिससे अद्भुत चमत्कार पैदा हो जाता है।

कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में
क्यारिन में कलिन कलीन किलकत हैं।

ब्रज भाषा का सुंदर साहित्यिक रूप आपकी रचनाओं को अलग ही पहचान दिलाता है।

पद्माकर रीतिकाल के अंतिम श्रेष्ठ कवि हैं। रस निरूपक आचार्य कवि के रूप में उन्हें बहुत ख्याति मिली। सजीव मूर्तविधान करने वाली कल्पना द्वारा उन्होंने प्रेम और सौंदर्य के मार्मिक चित्र प्रस्तुत किए हैं। वे उत्कृष्ट प्रतिभा-संपन्न कवि हैं। उनके काव्य की दो विशेषताएँ सर्वोपरि हैं–दृश्य और शब्द-योजना के द्वारा प्रकृति के माध्यम से ऋतु-वर्णन और कल्पना की उल्लासमयी उड़ान। आनंद और उल्लास से जगमगाते चित्र प्रस्तुत करने में उनकी शब्द-संयोजना अनुपम है।

12.6 आपने क्या सीखा

1. पद्माकर रीतिकाल के अंतिम समर्थ कवि हैं। उनका काव्य भी उनके जीवन की तरह ही उल्लास और ऐश्वर्य से युक्त है।
2. पद्माकर की भाषा में रीतिकालीन काव्य-भाषा और शिल्प की समस्त सरसता, सुघढ़ता, कोमलता और आलंकारिकता मिलती है। ब्रजभाषा का प्रौढ़ साहित्यिक रूप पद्माकर के काव्य में बड़े स्वाभाविक रूप में विद्यमान है।
3. उनके रूप चित्र भी रंगीन और आकर्षण हैं। फाग के जो नयनाभिराम सहृदयता भरे दृश्य चित्र कवि ने अंकित किए हैं, उनमें भाव-प्रवणता और दृश्यविधायिनी क्षमता का पूरा परिचय मिलता है।

12.7 योग्यता-विस्तार

(क) कवि परिचय

महाकवि पद्माकर रीतिकाल के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। उनका जन्म संवत् 1810 में जिला बाँदा में हुआ था। उन्होंने अपनी प्रतिभा के कारण अनेक

राजदरबारों में प्रतिष्ठा प्राप्त की। पद्माकर ने बाँदा के हिम्मत बहादुर सिंह के दरबार में रहकर 'हिम्मत बहादुर विरुदावलि' की रचना की। सितारा नरेश रघुनाथ राव, जयपुर नरेश सवाई जगतसिंह और राज प्रताप सिंह तथा ग्वालियर नरेश दौलतराव सिंधिया के यहाँ आपने सम्मानपूर्वक आश्रय प्राप्त किया।

पद्माकर की प्रमुख रचनाएँ हैं– 'हिम्मत बहादुर विरुदावलि', 'जगत विनोद', 'पद्माभरण', 'राम रसायन' 'गंगा लहरी' आदि।

माना जाता है कि कवि पद्माकर जीवन के अंतिम समय में कुष्ठ रोग से पीड़ित हो गए थे और गंगातट पर गंगाजल का निरंतर सेवन करने के उपरांत वे स्वस्थ होते चले गए। अतः उन्होंने गंगा की स्तुति में 'गंगालहरी' नामक ग्रंथ की रचना की। अंततः उन्होंने कानपुर में गंगातट पर ही निवास स्थान बना लिया और 80 वर्ष की आयु में उनका देहांत हो गया।

(ख) कवि पद्माकर की निम्नलिखित रचनाएँ पढ़िए और आनंद लीजिएः

1. फाग के भीर अभीरन में गहि गोविंद लै गई भीतर गोरी।
माई करी मन की 'पद्माकर,' ऊपर नाइ अबीर की झोरी।।
छीन पितम्बर कम्मर तैं सु, बिदा दई मीड़ि कपोलन रोरी।
नैंन नचाइ कह्यौ मुसक्याइ, लला फिरि आइयो खेलन होरी।।

2. कूलन में, केलि में, कछारन में, कुंजन में,
क्यारिन में कलिन–कलीन किलकत है।
कहैं 'पद्माकर' परागनहूँ में, देस देसन में,
पानन में पिकन पलासन पंगत है।
द्वार में, दिसान में, दुनी में, देस देसन में,
देखो द्वीप-द्वीपन में दीपत दिगंत है।
बीथिन में, ब्रज में, नबेलिन में, बेलिन में,
बनन में, बागन में, बगर्‌यौ वसंत है।

(ग) प्रकृति सौंदर्य चित्रण या ऋतु दर्शन पर बिहारी, देव आदि कवियों के कवित्त और सवैये पढ़िए और उनका संकलन कीजिए।

12.8 पाठांत प्रश्न

1. 'औरै रस औरै रीति, औरै राग, औरै रंग, औरै तन, औरै मन, औरै बन ह्वै गए', इस काव्य-पंक्ति में 'औरै' पद की बार-बार आवृत्ति क्यों हुई है?

2. 'फाग' कवित्त में गोपिका अपनी किस विवशता का वर्णन कर रही है?

3. निम्नलिखित पक्तियों की सप्रंसग व्याख्या अपने शब्दों में कीजिएः

एकै संग धाए नँदलाल और गुलाल दोऊ,
दृगनि गए जु भरि आनंद मढ़ै नहीं।
धोय-धोय हारी, 'पद्माकर' तिहारी सौंह,
अब तौ उपाय एक चित्त में चढ़ै नहीं।
कैसी करौं, कहाँ जाऊँ, कासे कहूँ, कौन सुनै,
कोऊ तो निकासो, जासै दरद बढ़ै नहीं।
एरी मेरी बीर! जैसे-तैसे इन आँखिन तैं।
कढ़िगो अबीर, पै अहीर तो कढ़ै नहीं।।

4. पद्माकर की काव्य भाषा पर सोदाहरण टिप्पणी कीजिए।

5. निम्नलिखित पद को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः

फूले आसपास काल विमल अकास भयो,
रही ना निसानी कहूँ महि में गरद की।
गुंजत कमल दल ऊपर मधुप मैन,
छाप सी दिखाई आनि विरह फरद की।

(क) 'गरद' और 'मधुप' शब्दों के अर्थ बताइए।

(ख) कविता में किस ऋतु का वर्णन किया गया है?

(ग) कमल पर भौंरों के गूँजने की चर्चा कवि ने किस संदर्भ में की है?

(घ) कविता में कवि ने विरह की बात क्यों की है?

12.9 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. भौरों की, ऋतुराज वसंत के आगमन से
2. वसंत आगमन पर सभी खुश होकर नाच उठे हैं। वनों में भी पक्षी तथा जानवर भी चहकते हुए प्रसन्नता व्यक्त कर रहे हैं।
3. नेत्रों से अबीर निकल गया पर कृष्ण की छवि नहीं हट रही।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.1 1. वसंत की मादकता और मस्ती के प्रभाव के कारण
2. अनुप्रास
3. वसंत की मादकता के प्रभाव के कारण
4. रोचकता, चंचलता, भाव प्रवणता

12.2 1. (ग)
2. विश्वास का
3. 'कैसी करौं कौन सुनै'।
4. गुलाल निकल गया, कृष्ण।